CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF-5.689
Peer Reviewed/
refereed Journal
ISSN-
Print-2231-3613,
Online-2455-8729

Prof.A.P.Sharma (25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th May 2020, Revised on 25th May 2020; Accepted 10th June 2020

शोध–पत्र

प्राचीन मालवा की मृण्मूर्तिकला : एक सांस्कृतिक अध्ययन

* **डॉ. मंजू यादव,** *रिसर्च फैलो*
महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
1, उदयन मार्ग, उज्जैन, मध्यप्रदेश
ईमेल– ....., मोबाईल–.....

मुख्य शब्द – *मूर्तिकला, स्थापत्यकला, मृण्मूर्ति कला, ताम्रपाषाण काल, कायथा, आहड़, मालवा, जोर्वे संस्कृति आदि।*

सारांश

मध्यप्रदेश पुरातात्विक धरोहर के लिए प्रसिद्ध रहा है। मध्यप्रदेश में मूर्तिकला, स्थापत्यकला के साथ–साथ मृण्मूर्ति कला में भी अपना वैभव बनाये रखा है। इससे मालवा क्षेत्र अछूता नहीं है। मृण्मूर्तिकला, भारत के कला कौशल का जीवान्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। पुरातत्व के अवशेष ही प्राचीन इतिहास के सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक एकता का प्रमाण देते हैं। उत्खनन से प्राप्त अन्य सामग्रियों की अपेक्षा मृदभाण्ड एवं मृण्मूर्तियाँ अधिक पायी जाती है।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश भारत का हृदय प्रदेश रहा है। इसमें मालवा पुरातात्विक धरोहर एवं उत्खनन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। मालवा की प्राकृतिक सौन्दर्य, भौगोलिक परिवेश, प्राकृतिक संसाधन, पशु–पक्षी, उपजाऊ भूमि, नदियों और घाटियों ने मानव को अपनी ओर आकर्षित किया। मालवा का विभिन्न क्षेत्रीय कला रूपों का उपहार इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण मिला। कायथा, दंगवाडा, एरण, रूनिजा, नवदाटोली, उज्जैन आदि स्थलों पर ताम्रपाषाण कालीन स्तरों से लेकर ऐतिहासिक काल के स्तरों तक विभिन्न प्रकार की तकनीकियों से बनाई गई वस्तुओं के मृण्मय स्वरूप प्राप्त हुए है। ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के प्रकार – कायथा, आहड़, मालवा एवं जोर्वे संस्कृति को यद्यपि भौगोलिक स्थिति को मुख्य आधार माना है। मृदभाण्डों की निर्माणकला, चित्रकारी और उनका स्वरूप इन विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के द्वारा संकलन किया गया है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं, दैनिक समाचार पत्र एवं विद्वानों का मार्गदर्शन शामिल है।

उद्देश्य

मालवा की मृण्मूर्तियों के सांस्कृतिक अध्ययन के ये महत्वपूर्ण तत्व है :–

1. मानवीय जनजीवन
2. धार्मिक कार्य
3. आर्थिक स्थिति

4. सामाजिक जीवन – (1) वस्त्र–आभूषण (2) मनोरंजन के साधन

समस्या

मिट्टी के बर्तनों का रखरखाव अधिक कठिनाई पूर्ण होता है। इससे प्राचीन काल की मिट्टी की वस्तुएं जो संग्रहालय में है उनकी सुरक्षा की भी समस्याऐं समाने है। आज मिट्टी की निर्मित वस्तुओं का प्रचलन भी कम हो गया है। इससे इनकी खपत कम होने से उत्पादन की समस्या है। इसे सरकार द्वारा प्रोत्साहन भी उतना नहीं मिल रहा है जितना मिलना चाहिए। इस प्रकार समस्या बनी हुई है।

समाधान

मानवीय जनजीवन

मालवा का जनजीवन अत्यन्त प्रभावशाली रहा है, जिसके प्रमाण हमें ताम्रपाषाण काल से लेकर गुप्तकाल तक मिलते हैं। इसके प्रमाण हमें मालवा के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों के उत्खनन से प्राप्त मृण्मय वस्तुओं से मिलता है। मिट्टी से बनी मानव मूर्तियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ के समाज धनिक एवं सामान्य दो वर्ग थें। मूर्तियों की बनावट उनका पहनावा, आभूषण तथा बिल्कुल सादा मानवीय आकृतियों के रूप में दो वर्गों को समझा जा सकता है। कभी–कभी मानव आकृति के अंग वस्त्र तथा अन्य तत्वों से यह संकेत मिलता है कि किसी मूर्ति विशेष का संबंध उसकी संस्कृति से अधिक होता है।

मालवा की मूर्तियों में अधिकांशतया यहाँ का पर्यावरण, जीव–जन्तु तथा प्राकृतिक परिवेश में पहाड़ों, घने जंगलों, गहरी घाटियों तथा जनजातियों का प्रभाव मृण्मूर्तियों में मिलता है। प्रेम एवं वात्सल्य के भाव भी दिखाई देते हैं। नवदाटोली से प्राप्त माँ एवं शिशु की मृण्मूर्तियों के उदाहरण प्रमुख है। ये मूर्तियाँ गुप्तकालीन है। एक सिरविहिन माँ अपने बच्चे को गोद में लिये खड़ी है। बच्चा माँ की गोद में अत्यन्त वात्सल्य भाव से बैठा है और एक अन्य मृण्मूर्ति में बच्चा बाएँ हाथ से माँ के एक स्तन को दुग्धपान करने की लालसा से छूता हुआ दर्शाया गया। इस प्रकार शिल्पी ने न सिर्फ मानवोचित भावनाओं को अत्यन्त सहजता के साथ कला के रूप में प्रदर्शित किया है। इसी प्रकार अनेक मृण्मूर्तियों पर पशु–पक्षियों के साथ–साथ जनजातियों के मुखौटे एवं नृत्य का अंकन भी मिलता है।

धार्मिक तत्व

कायथा, दंगवाडा, एरण, नवदाटोली, विदिशा, नागदा, उज्जैन, महिदपुर आदि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त कुछ मृण्मय वस्तुओं एवं मूर्तियों से यह ज्ञात होता है कि मालवा की प्राचीन संस्कृति में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ की शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन आदि धर्म प्राचीन काल से ही अस्तित्व में थे। नवदाटोली, कायथा, उज्जैन, महिदपुर, दंगवाडा, नागदा, आदिस्थलों से मातृदेवियों की मृण्मूर्तियाँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है।

इस प्रकार शाक्त धर्म का अस्तित्व मालवा में ताम्रपाषाण काल से ही प्रमाणित होता है। डॉ. वाकणकर जी ने दंगवाड़ा के सर्वेक्षण के दौरान 1966 में मालवा सँस्कृति के एक चित्रित जार में एक टूटी हुई मातृदेवी की मृण्मूर्ति रखी हुई मिली थी। यह मूर्ति कमर के नीचे से सपाट थी। दंगवाडा की एक अन्य मातृका मूर्ति का निचला भाग गोल एवं सादा है। इसकी आकृति यहाँ के N.V.P. के मृदभाण्डों पर चित्रित मातृदेवी आकृति से मिलता–जुलता है। महिदपुर, उज्जैन से भी ऐसे कई प्रमाण प्राप्त हुए है। दंगवाडा से बौद्ध देवी 'हारिति' की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जो यहाँ बौद्ध सम्प्रदाय के अस्तित्व को सिद्ध करती है। मालवा से कई प्रतिमाओं को सांचे में ढालकर बनाया जाता था।

अतः इन स्थलों से वृषभ की मृण्मूर्तियाँ भी ताम्रपाषाणिक स्तरों से लेकर ऐतिहासिक काल तक के स्तर से प्राप्त हुई है। इससे यह अनुमान होता है कि ये वृषभ मूर्तियाँ पूजा के लिये प्रयोग में लाई जाती थी। दंगवाडा से एक सुपुष्ट तथा ककुदमान वृषभ की सुन्दर आकृति मिली है। इसी के साथ यहाँ से मिट्टी के दीपक भी प्राप्त हुए है। नवदाटोली, दंगवाडा, कायथा, महिदपुर आदि से मौर्य, शुंग एवं कुषाणकालीन दीपक एवं बुद्ध की मृण्मृतियाँ भी प्राप्त हुई है। दंगवाडा से गुप्तकालीन बुद्ध की एक मूर्ति से यह ज्ञात होता है कि वह मूर्ति का सिर इसमें इनके दो लम्बे कान स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसी प्रकार यहाँ से एक बुद्ध की एक खड़ी हुई पूर्ण

प्रतिमा प्राप्त हुई है, जिसमें उनके ढीले ढाले वस्त्र तथा एक हाथ समय मुद्रा में और दूसरा नीचे लटका हुआ दर्शाया गया, जिससे यह ज्ञात होता है कि कुषाणकाल एवं गुप्तकाल में बौद्धधर्म अत्यन्त लोकप्रिय था।

इसी प्रकार दंगवाडा से कार्मोत्सर्ग मुद्रा में एक मानव मृण्मूर्ति गुप्तकालीन जिनके केश घुंघराले तथा सिर पर उष्णीष बना है। अनुमान है कि यह मूर्ति जैन तीर्थंकर की है। इस प्रकार इन स्थानों से अनेकों गज, मत्स्य, कच्छप, हंस, अश्व, गरुड, वृषभ आदि की मूर्तियाँ यहाँ से अधिक संख्या में प्राप्त हुई है। दंगवाडा से कई पशु–पूजा एवं बुद्ध के प्रतीक रूप और देवी–देवताओं के वाहनों के रूप में भी जाती रही होगी। अतः ये पशु किसी न किसी स्तर पर मानव जीवन से गहरा संबंध था। अतः इससे यह सिद्ध होता है कि मालवा का धार्मिक कार्य में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

आर्थिक स्थिति

मालवा के कायथा, एरण, नवदाटोली, उज्जैन, महिदपुर, विदिशा, दंगवाडा, नागदा आदि स्थलों से ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति की अर्थव्यवस्था अधिक उन्नत थी। यहाँ के मृदभाण्ड, भंडार पात्र (जार), वृषभ, मत्स्य आदि की आकृतियाँ प्रमुख है। समाज में मत्स्य भोजन सामग्री होने के कारण आर्थिक उत्पादन में सहायक थी। वृषभ कृषि उपयोगी था तथा खेती करने के साथ–साथ आवागमन का साधन बना। विदिशा से विशेषतः दन्तशिल्प और उसके व्यापार के साक्ष्य साहित्यों से भी प्राप्त होते हैं। गज (हाथी), घोड़े एवं गाय आदि का भी आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सामाजिक जीवन

इसमें मालवा के मनुष्यों का रहन–सहन, वस्त्राभूषण एवं मनोरंजन के साधन पर अधिक जोर दिया गया है।

वस्त्राभूषण

सामाजिक जीवन में वस्त्र–आभूषण अधिक महत्व रखता है। किन्तु मालवा क्षेत्र से प्राप्त मूर्तियों में स्पष्ट अंकन नहीं मिलता है किन्तु सांची के तोरणद्वार तथा वेदिकाओं पर ऐसे अंकन प्राप्त हुए है। इनमें दो वर्गी की कला को दर्शाया है। एक तरफ बहुत ही सादा पहनावा तथा दूसरी ओर विलासितापूर्ण जीवन को दर्शाया गया है। किन्तु आभूषणों में कर्ण, कुण्डल, कान के टाप्स (द्विमुखी बटन) ताम्र फूल, जैरो, वर्ण, मेखला, कंकण, आवला और पायल आदि प्रमुख है। इसी के साथ–साथ केश–सज्जा के प्रमाण भी मिलते है जिनमें बालों को विभिन्न प्रकार से गूथना (बांधना) तथा वांछित आकार देने और फूलों से, आभूषणों से, मोतियों से, मूंगों से, लघु श्लाका आदि से संतुलित करने के अनेक उपाय लोक जीवन के प्रमाण हेतु इनकी मूर्तिकला से प्राप्त हुई है। केश सज्जा कुछ शैली प्रमुख थी जिनमें मयूरगुच्छ शैली, सीमांत शैली, मधुमक्षिका, शिखंदशैली, अलकावली शैली आदि थी।

मनोरंजन के साधन

प्राचीन मालवा क्षेत्र में बच्चों तथा वयस्कों के आमोद–प्रमोद के अनेक साधन थे, जिनमें मोहरें, शतरंज के पासे, मिट्टी की चिकनी गेंदों, गोलियाँ, पहिये आदि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी के बने बंदर, हाथी, घोड़े, मछली, कछुए, गाड़ियाँ और अनेक पहिये, बैल, कुत्ते, भेड़ आदि की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है। ये मूर्तियाँ अधिकांशतः छिद्र युक्त है। जिससे ज्ञात होता है कि इनमें रस्सी बांधकर बच्चे खेलने के काम में लेते थे। इनके प्रमाण हमें मल्हार, रूनिजा, विदिशा, उज्जैन, मंदसौर आदि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त हुए है। इसी के साथ–साथ मालवा का लोक नृत्य एवं संगीत भी यहाँ के लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन को व्यक्त करता था। महिलायें संगीत के साथ संजा एवं मांडव कला का उपयोग करती थी। अतः मालवा का प्राकृतिक दृश्य सुहावना होने के कारण यहाँ मानव ने अपने शुद्ध भावों को व्यक्त किया है। वीणा, ढोलक, बांसुरी, काष्ठ दंडिका, ढोल आदि वाद्य यंत्र आदि यहाँ की मृण्मूर्तियों से प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

अतः विभिन्न कालखण्डों से प्राप्त मृण्आकृतियों से यह ज्ञात होता है कि मालवा समाज अत्यन्त समृद्ध एवं उन्नतिशील होने के साथ–साथ वह नृत्य, संगीत एवं चित्रकला की विधा मानव के सुख–साधनों का अभिन्न अंग रही होगी। अतः मालवा की संस्कृति अत्यन्त विकसित अवस्था में थी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. एच. डी. साकलिया : सुब्बाराव एवंदेव, दी एक्सवेशन एट महेश्वर एण्ड नवदाटोली, 1952–53, पूना, 1958.
2. के. सी. जैन, मालवा थ्रू दी एजेज, दिल्ली, 1972.
3. के. के. चक्रवर्ती, बी. एस. वाकणकर, खरे, दंगवाड़ा एक्शवेशन, 1976.
4. चन्द्रभूषण त्रिवेदी, दशपुर, भोपाल, 1976.
5. ए. एन. बेनर्जी, नागदा, 1986, नई दिल्ली
6. डॉ. वाकणकर, प्राच्च प्रतिमा, भाग–4, 2 जुलाई 1976.
7. डॉ. राजकुमार शर्मा, मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रन्थ, भोपाल, 1979.
8. डॉ. मुकेश जैन, मध्यप्रदेश की मृण्मूर्तिकला, 2006.

**** Corresponding Author:***

डॉ. मंजू यादव, *रिसर्च फैलो*

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ

1, उदयन मार्ग, उज्जैन, मध्यप्रदेश

ईमेल– ..... मोबाईल–.....